जहांगीर नो विधर्मी पवित्र पुरुषो प्रत्येनो आदर

विद्वानो जोड़े धर्म अंगेनी चर्चा मां रस अने अनेक संप्रदायोना आचार्यो साथ नों संपर्क अने व्यवहार, शेख़ मुबारक अने तेना पुत्र अबुल फज़ल ना धर्म सहिष्णुता अंगे ना विचारो नो प्रभाव अने सौ करतां विशेष ते समये चालतां धार्मिक सुधारा माटे नां आंदोलनोए कुटुम्ब मां चाली आवती मजहबी भावनाओ बाबत मां अकबर माँ परिवर्तन आण्युं हतु । तेना दरबारीयो उपर ए कार्यनी भारे असर हती. बादशाहे सर्व धर्मनो अभ्यास करी अंत:करण ने योग्य लागता सिध्धांत मुज्जब बर्तन राखवानुं मन साथ विचारी लीधुं । तेनो पुत्र सलीम तख्तनशीनी पछी जहांगीरनां टूंका खिताब थी ओलखायो ते पण तेना बाप अकबरनी की पेठे धर्म चुस्त मुसलमान रह्यो न हये, शबे-बरात (१) अये ईदना तहेंवारो तो ते पालतो हतो; परंतु ते साथे पारसीओना नवरोज़ (२) अने हिन्दुओना दिवाली, दशेरा, रक्षाबंधन अने शिवरात्रि ना मोटा हिन्दु तहेवारो पण हिन्दु राजवीओनीजेम उत्साहपूर्वक अने दबदबाथी ते उजवतो हतो (३)

सलीमना जन्म (ई० सं० १५६९) अंगे कहेवाय छे के अकबर ओगणत्रीस के त्रीस बरसनी उमरे पहोंचे ते अगाउ तेने अनेक बालको थयाँ हतां; परन्तु तेमानु एक पण हयात रह्युं न हतुं. आथी तख्त माटे ना तेना उत्तराधिकारी अंगेनी चिंता तेना दिलने सतावबा लागी हती, अधीरो बनी अल्लाहनी रेहमत ने पहोंचेला (अेटले के मृत) तेमज तसव्वुफना राह उपर चालनारा (हयात) सूफीओनी दरमियानगीरी ते अे सिद्धि माटे शोधता फरतो हतो—दर बरसे अजमेर मां आवेली

---

१. मुसलमानों नी मान्यता मुजब अे रात्रि दरमियान खुदाना हुक्म मुजब फरिश्ता मनुष्यों ना जीवन ना कार्यो नो हिसाब करे छे अने तेमने जीविका बहेंचे छे, मुसल्मानो नमाज पढे छे, जागरण करे छे, अने ते पछीना दिवसे रोजो राखे छे.

२. ईरान मां उत्सव नो दिवस छे. ए पछी वसंत नी शरुआत थाय छे. ए मार्च नी २२ मी तारीखे पड़े छे.

३. जहांगीर नी आत्मकथा, तुजुके जहांगीरी मां अंगेना आधारो अनेक ठेकाणे मले छे.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शेख मुईनुद्दीन चिश्ती (मृ० ई० स० १२३६) नी दरगाहे जातो (१) अने खाहिश बर आवशे तो पगपाला तेनी जियारत करवानी मानता पहा तेणे मानी, ए संयोगे दरमियान अे साथे शेख सलीम चिश्ती (मृ० ई० स० १५७२) नामना नेवुं वरसना वृद्ध सूफीनो सहारो मेलववाते तेने मलयो ।

जहांगीरे पोतेज तेनी आत्मकथा तुजुके जहांगीरीमां (२) अे अंगेअेवी विगत आपी छे के "हजरत अर्श-आशियानी (स्वर्गस्थ अकबर) सल्तनत नी संस्थाज़ारी राखवाने अल्लाह पासे थी तख्त माटे योग्य पुत्रनी मागणी कर्या करता हता, त्यारे तेना मानीता दरबारीयो मां थी कोईक जणावयुं के शेख सलीम नामनो एक दरवेश आ तरफना सूफीयो मां पवित्रता माटे मशहूर छे अने अकबरावाद (आग्रा) थी बारकोस उपर आवेला सीक्री कस्बा मां रहे छे आपजो आपनीआ आरजू तेमनी आगल प्रदर्शित करो तो मुरादनु झाड़ तेमनी दुवाना सिंचण थी फलाऊ बनशे. ते पछीते हजरत (अकबर) शेखनी मंजिल ऊपर गया अने नम्रता अने निष्ठा साथे दिलनी आ बात तेनी आगल जाहेर करी. तेनी मुराद फलशे अेवा शुभ समाचार तेमने शेखे आप्या. त्यारे तेमणे कह्युं के "हवे हुं बाधाराखुं छुं के ते फरजंदने आपनां दामन मां उछेर माटे मूकीश. जेम ने आपनी बाह्य तेमज आंतरिक बरकत थी महान थाय. शेख अे प्रस्ताव मान्य राख्यो अने ते बोल्या कि मुबारक रहे अने तेनु नाम अमे अमारा पोताना नाम उपरज राखी दीधुं" थोड़ाज समय मां निष्ठाने परिणामे उमेद बर आवी. जन्नत मकानी(४) (स्वर्गस्थ वालिदा) ने प्रसव नो समय नजीक आव्यो त्यारे तेने शेखने त्यां मोकलवा मां आवी अने मारो जन्म फतेहपुर मां शेख सलीम नी मंजिल मां थयो. त्यारे करार कर्या मुजब नाम सलीम राखवा मां आव्यु"

जहांगीर नो चारित्र्य बाबत मां सामान्य रीते जे कोई इतिहासों मां नोधायुं होय ते लक्षमां लेवा मां आये तो तेना जन्म समय ना मजकूर रुथेला अने तेना पिता अकबर ना दरबार ना धार्मिक सहिष्णुत भरेला वातावरण ना प्रभाव ने लई ने मुसल्माने तेमज हिंदु अने अन्य धर्मोना पवित्र पुरुषो मां तेणेत्यारे श्रद्धा दाखली हती.

ए बीजी दृष्टिए विचार करतां ते समये हिंदुओ अने मुसलमानो मां जाहेर मां आवता नया सुधरेला संप्रदायो अंगेनु तेनु ज्ञान नहिवत हतुं. एकज अल्लाह नी मान्यता थी अने मजहब नी चालु आवती रूढ़िना

---

१. अकबर नामा तबकाते अकबरी, मुन्तखबुत्तवारीख, जहांगीर नामा

२. पृष्ठ ३ (दीबाचो)

३. अल्लाह तालानुं सोऊ ऊंचा आसमान उपर तख्तहोवानुं मनाय छे अने त्यां जेनो मालो छे ते मोगल सल्तनत दरमियान गुजरेला शहेनशाहोने आवा खिताबो आपवां मा आवता ।

४. कोई इतिहास मांतेनुं नाम मलतुं न थी. सुजनराये (खुलास तुत् तवारीख पृष्ठ ३७४ दिल्ली) मा मरियमुज्जमानी (जमाना नी मरियम एटले जीसमक्रा इस्तनी माता अंग्रेजी में मेरी) ससंद त्यारे ते हयातने होवाथी जहांगीर तेने माटे जन्नत मकानी (एटले के जन्नत मां हवे जेनु स्थान छे ते) शब्द वापर्यो छे. मरियमुज्जमानी तेनु अधिकार युक्तनाम हतुं, अकबर नी ए बेगम मूल रजपूत राजकुंवरी हथी.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पालन थी ते संतोष मानतो हतो. अने, संतो, सूफीयो, सन्यासीओ अने धर्माचार्यो ने मलवा मां अने तेमनी साथे वात अने चर्चा करवा मां तेनो रस पड़तो हतो. परन्तु ते साथे खटपटी लोकप्रिय धर्माचार्यो अने धर्मांध लोको ने सामाजिक अने राजकीय व्यबस्थानी स्थिरता मलबवामां ते खतरनाक लेखतो हतो.

शीख गुरु अर्जुन ऊपर तेना शासन दरमियान थयेलो जुलम चर्चास्पद छे. ए गुरु (जन्म ई. स १५६३) गोविंद वाल मां रहेतो हतो. ते चोथा शीख गुरु रामदास नो पुत्र हतो. बालवय थीज आध्यात्मिक स्वभाव अने ध्यानी चित्त ते धरावतो होवानी वात प्रचलित हती. ई. स. १५८१ मां शीख गुरु तरीके तेणां पिता नो ते उत्तराधिकारी बन्यो. तेना पूर्वगामीओं नां हिंदु अने मुसलमान सुधारको ना अने तेमनां पोतानां भजनो अने कथनो नो संग्रह आदिनाथ ग्रंथ मां तेणे कर्यो हतो. तेनु निरीक्षण करतां अकबर ने अर्जुन नी आदर्श प्रतिभा नी झांकी थई हती. ते शहनशाह ना अवसान पछी अर्जुन गुरु ए परेशान हालत मां रहेता बंडखोर शाहजादा खुसरों ने सहारो आपवानी भूल करी पाड़ी[1] जेने लईने तेने माथे आफत उतरी. गुरु ना विरोधीओ एवो पूरो लाभ उठाव्यो अने जहांगीर आगल राज्यद्रोह अने दुराचार ना रंग थी रगी ने ए बाबत रुजु करी. परिणाम शहेनशाहे शत्रुओ नी जाल में फंसाई पड्यो. तेणे तेने सजा करी अने तेनी माल-मिल्कत जप्त करावी (ई० स० १६०६).

जहांगीरे पोतानी तुजुक मां आ बनाव नी विगत आपी छे. तेणे बताव्युं छे[1] के "बियाह नदी ने किनारे आवेला गोविंदवाल मां एक हिंदु रहतो हतो तेनुं नाम अर्जुन हतुं. ते संत रूपे रहेतो हतो. अनेक भोला भला हिंदुओ बल्के अज्ञान अने मुर्ख मुसलमानों ने पंण तेणे पोतानी रीति-नीति मां बांध्याजहता. तेओ तेना संत-जीवन अने तेनी पवित्रता नी बुलंद आवाजे जाहेरात करता हता. तेओ तेने गुरु कहेता हता. आजु बाजुथी बेवकूफ लोको अने मुर्ख भक्तो तेने आवी मलता रहता. अने तेनामां तेओनी अंध श्रद्धानी ऐ रीते प्रतीति करावता हता. गुरुनी त्रण चार पीढी थी आ दुकान चालु आवती हती. लांबा समय थी मने विचार आव्या करतो हतो के आ दुकान काढी नांखवी जोइए अथवा तो तेने मुसलमानो नी जमात मां लाववु जोइए. अंते एवुं बन्युं के आ रस्ते खुसरो प्रसार थयो अने आ नालायके तेनी सेवा मेलव वानो इरादो कर्यो. जे स्थले ते रहेतो हतो त्यां तेणे मुकाम कर्यो. ते तेने मल्यो अने तेने केटलीक बाबतो जणावी. ते पछी तेणे तेनो कपाल उपर तिलक कर्युं. एने हिंदुओ शुकनियाल माने छे. आ बात मारा सांभलवामां आवी. में तेने सम्पूर्ण रीते पोकल गणीने तेने मारी आगल हाजर करवाना हुक्म कर्यो. तेना आश्रम तथा तेना बालकों ने में मुर्तजा खान (नामना अमलदार) ने सोंप्या अने तेनां माल मिल्कत जप्त कराव्यां. तेने में सजा फरमावी"

---

१. शीख अनुश्रुति परा मुजब अकबरे तख्त माटे खुसरोनी नीमपु कह करी हती. ते बखते ते काबुल रह्यो हतो. तेणे अर्जुन गुरु ने नाणांनी मदद आपवा आजीजी करी हती. गुरु ए जवाब मां कह्यु के 'मारुं नाणुं गरीबो माटे छे अने शाहजदाओ माटे नथी. खुसरो बोल्यो के हुं अत्यारे गरीब, तंग अने निराधार हालत मां छुं अने मारी पासे मुसाफरी करवामाटे खर्चना पैसा न थी" गुरु अर्जुन ते पछी तेने पांच हजार रुपिया आप्या (Macauliff-Sikh Religion Vol. III pp 84-5; Cunningham—History of the Sikhs & Garrett pp. 53)

१. तुजुके जहांगीरी पृ० ३५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शीखोनी अनुश्रुतिमां आ बनाव नीचे प्रमाणे नोधवामां आवेलो छेः—

जहांगीरे गुरु ने तेनी सामे बोलाव्या अने कह्युं के 'तुं एक महान् संत छे, एक महान् उपदेशक छे अने पवित्र पुरुष छे, तुं गरीब अने तवंगर ने समान गणे छे, ते थी मारा दुश्मन खुसरोने तें पैसा आप्या ए योग्य न कर्युं' अर्जुने जवाब आप्यो के हुं हिन्दु के मुसलमान, तवंगर के गरीब, दोस्त के दुश्मन एम तमामने मोहवत के नफरतनी (पक्षपात) दृष्टि थी जोतो न थी, अने आज कारण थी तारा पुत्र ने में थोड़ा पैसा तेनी मुसाफरीनां खर्च माटे आप्या अने नहि के ते तारो विरोधी हतो ते थी, जो में तेने तेनी जलती परि-स्थितिमां सहाय न करी होत अने तारा पिता शहेन शाह अकबरनी मारा तरफ नी माया ध्यान में राखी होत तो आम जनता ए मारा हृदयनी कठोरता माटे मने धिकार्यो होत, अने तेओ कहेत के हुं डरतो हतो, दुनियांना गुरु, गुरुनानक ना अनुयायी ने माटे ए विना अरण घटती बनत" ते पछी जहांगीरे तेने बे लाख रुपियानो दंड कर्यो अने हिंदु अने मुसलमान धर्मो विरुद्धनां भजनो तेनां ग्रंथमाथी काढी नांखवानो तेने हुक्म कर्यो। त्यारे अर्जुन गुरु बोल्या के 'जे कई धन मारी पासे छे ते रंक निराधार अने अजाण्या लोकोने माटे छे, जो तारे धन जोइतुं होय तोतुं मारी पासे जे छे ते लई ले; परंतु जोतुं दंड तरीके ते मांगतो होय तो हुं एक कोडी पण तने आपीश नहि; कारण के दंड दुष्ट दुन्यवी लोको उपर लादवामां आवे छे अने नहि के धर्माचार्यो अने सन्यासीओ उपर। ग्रंथसाहेबमांना भजनो काडी नांखवा बाबत मां जे कई तें कह्युं ते अंगे जणाववानुं के हुं सहेज पण ते मांथी काढी नांखीश नहि, के बदलीस नहि, हुं शाश्वत ईश्वर अने परमात्मा नो भक्त छुं, तेना सिवाय कोई शासक न थी, अने तेणे जे कंई गुरु नानक थी मांडी गुरु रामदास सुधीना गुरुओना अने ते पछी मारा हृदय मां प्रगट कर्युं छे ते पवित्र ग्रन्थ साहेब मां नोंधवामां आवेलुं छे, जे भजनो तेमां स्थान लीधे लुं छे ते कोई हिंदु अवतार के कोई मुसलमान पैगम्बर ने माटे अपमान युक्त न थी, पेगम्बरो धर्माचार्यो अने अवतारो असीम शाश्वत् ईश्वर तरफ थी कार्यो करे छे एम तेमां श्रद्धापूर्वक लखेलुं छे, मारु ध्येय सत्नो प्रचार अने जूठ नो विनाश करवानुं छे अने ए कार्यनी सिद्धि मां आ क्षणभंगूर देहनो लय थाय तो हुं मारुं अहो भाग्यलेखीश.

कंई जवाब आप्या बिना मुलाकातनो ओरडो छोडी जहांगीर चाल्यो गयो, काजी ते पछी गुरुने जणाव्युं के 'तमारे दंड भरवो जोइए अने नहि तो केद भोगववो जोइए; अर्जुन दंड भरवा माटे फांलो उध-रावानी मनाई तेमना अनुयायीनो तुरतज करी, काजीअने अने पंडितो तेमना ग्रंथ मांथी बांधा भरेलां भजनो काढी नांखे तो तेमने मुक्ति आपवानी दरखास्त पेशकरी, त्यारे अर्जुन जवाब आप्यो के 'मनुष्यो ने आ अने बीजी दुनियां मां सुख अने नहि के आपत्ति आपवा ग्रंथ साहेबनी रचना करवामां आवेली छे, तेने नये सरथी लखुवुं अने तमो मांगो छो ते प्रमाणे तेमाथी काढी नाखवुं अने तेनां फेरफार करवो असंभवितछे, ते पछी शत्रुओए जे त्रास तेमना उपर गुजार्यो ते सर्व गुरुए शांत चित्ते अने खामोशी पूर्वक सहनकर्यो अने न तो निसासो नांख्यो अने न तो दुःखनो अवाज काढयो, बदले सुं वचन उच्चारवा तेमने वीजी तक आपवामां आयी त्यारे निडरपणे तेणे जवाब आप्यो, 'मूर्खाओ! हुं तमारा आवर्तन थी कदी डरवानो

---

1. Gokul Chand Narang—Transformation of Sikhism, pp. 31–41.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नथी. आ सर्व ईश्वरेच्छा थीज बने छे. जे कारणने लईने आ जुलम तमो मारा उपर करो छे, तेमां मने आनंदज आवे छे, शहेनशाह नी जाण अने मंजूरी बिना वधारे ने वधारे त्रास तेने आपवामां आव्यो. अंते एक दिवसे गुरू ए नदी मां नहावानी परवानगी मेलवी अने किनारे जई देह त्याग कर्यो !"

दबिस्ताने मजाहिब[1] मां जणाववामां आव्युं छे के गुरु अर्जुन ने जे दंड करवा मां आव्यो हतो ते ते भरी शक्यो नहि, ते थी तेने लाहोर मा केदखाना माँ राखवामां आव्यो. गरमी ने कारणे अने तेओने दंड तेनी पासे थी वसूल करवानुं काम सोंपवामां आव्युं हतुं तेमणे तेना उपर करेला जुलम ने लईने तेवुं मृत्यु थयुं.

जहांगीरे अर्जुनगुरु ने करेली सजा बाबत मां 'सियासत' अने 'यासा' शब्दो वापरेला छे[2]. 'सियासत नो अर्थ सजा थाय छे. अने यासा नो अर्थ मोंगोलिया नी भाषा मां 'फांसी' थाय छे. परतु ते समय बपराती प्रशिष्ट फारसी भाषा मां समानार्थ शब्दो एक साथे बापरवानी चालु आवती रूढि मुजब बे बने नो उपयोग 'सजा' नाज अर्थ मां थयो होवानी संभावना छे अने न के देहांत दंड अर्थ मां. जेम के केटलांक पुस्तकों माँ नोंधवा माँ आव्युं छे; मजकूर अनुश्रुतिमां पण देहांत दंड कर्यो होवानो उल्लेख नथी.

अहि जहांगीर अने खुस्रो ना संबंध बाबतमां थोड़ी स्पष्टत करवुं आवश्यक छे, जे उपर थी अर्जुन गुरु ने करेली सजाना कारण नो ख्याल आवशे. बन्युं हतु एवुं के जहांगीर नो मोटो पुत्र खुस्रो तेनी रजपूत बेगम मानबाई ने पेटे अवतरेलो हतो. रजपूतो नो तेनी तरफ पक्षपात हतो. अने अकबर पछी तेने तख्तनशीन करवानी पेरवी तेमणे करवा मांडी हती. खुसरो ए छडे चोक बापनी निंदा करवा मांडी. ए मान बाई सहन करी शकी नहि अने दिवानी बनी. ई०स० १६०४ मां तेणे अपघात कर्यो. अकबर बादशाह पण गभराई गयो हतो-तेथी तेणे तमाम सरदारो अने विशेष करीने मानसिंह पासे जहांगीर ने बफादार रहेवानां सोगंद लेवडाव्या. अकबर मांदो पड़तां कावत्रां शरू थयां अने जहांगीर तख्तनशीन थतां खुस्रोए बंड कयुं. अर्जुन गुरु ए तेने सहकार आप्यो. जहांगीर नां अति विपरीत संजोगो मां ए बन्यु अने तेने सजा थई. अर्जुन गुरु ए बंडखोर खुस्रो ने मदद करी ने पक्षपाती वलण न प्रदर्शित कर्युं होत तो तेने छेड़वानुं कोंई कारण जहांगीर माटे उपस्थित थातज नहि. पोतानुं जीवन पोतानी रीतेज ते जीवी शक्यो होत.

जहाँगीर ने पवित्र पुरुषो माटे अति आदर हतो. आध्यात्मिक ज्ञानविशे माहितीं मेलवबा बाबत मां तेने त्यारे आकर्षण हतुं अने ए अंगेना अनेक दृष्टांतो तेनी तुजुक मां भले छे. हि०स० १०१६ (ई०स० १६०७) मा ते काबुल मां हतो[3] त्यां तेने थयेला अनुभव नी विगत आपतां ते जणावे छे के—'बुधनो दिवस हतो. सरदार खान नो बाग परशावर (पेशावर ?) नजीक आवेलो छे. त्यां में मुकाम कर्यो. ते पछी तेनी नजीक आवेला गोरखरी तीर्थ स्थान तरफ हुं गयो, मने आशा हती के एकाद संत नजरे पडशे अनें तेना संपर्क थी कईक फायदो

---

१. हस्तप्रत, गुजरात विद्यासभा संग्रह नं० इ१४

२. तुजुके जहांगीरी, पृ० ३५

३. तुजुके जहांगीरी पृ० ५०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

थशे. परंतु एवो संत तो उन्का [1] अने कीमिया समान छे. ते तो एकांतवास सेवनारी होय छे, ते आ भरेली ठठ मां क्यां थी होय ? एक मंडली में थई. ते मां ना साधुओ ने मलतां दिलमां अंधकार सिवाय कंईज प्राप्त थयुं नहिं" आगल उपर जहांगीरे लख्युं छे के त्यां अन्य धणां संतो हता; परंतु ए सन्यासी थी उत्तम ते मंडली माँ कोई जोवा मां आव्यो नहि.

हि० स० १०२५ (ई० स० १६१६) नो एक बनाव छे ते बखते जहांगीर उज्जैन माँ हतो, त्यां ते गोंसाई जदरूप ने मल्यो. तेनी पाछल तो ते घेलो थई गयोहतो. तेनी साथेनी मुलाकात अंगे तेणे जणाव्यु छे के [1] "होडी मां बेसीने हुं आगल चाल्यो. में अनेक बार सांभल्युं हतुं के जदरुप नाम नो एक योगी केटलाक बरसो थी उज्जैन नजीकना जंगल मा एक खूणामां बस्ती थी दूर परम.त्मानी भक्ति मां लीन रहे छे. तेने मलवानी मारी घणी आतुरता हती. हुं आग्रा पायतख्त मां हतो, त्यारे तेने बोलावी तेने मलवानी मारी इ च्छा थई हती; परंतु तेम करवां माँ तेमने तकलीफ पड़े एवो ऊंडो विचार करी में तेमने बोल्यावो नहि. हुं मजकूर शहेर नी नजीक मां पहोंच्यो. होडी मांथी उतरी पगपाला तेने मलवा गयो। जे जगाए ते रहे छे ते एक गुफा छे. ते तेणे एक टेकरी मांथी खोदीने बनावेली छे. तेनो प्रवेश मेहराबना आकारे देखाय छे. तेनी लंबाई एक गज अने पहोलाई दस गिरेह छे.[2] गुफा ना ए प्रवेश आगल थी तेना रहेवानु स्थल सुधीनो भाग लंबाई मां बेगज अने पांच गिरेह अने पहोलाई मां सवा अगियार गिरेह छे. अने जे गुफा मां ते रहे छे तेनी लंबाई साड़ा पांच गिरेह अने पहोलाई साड़ा त्रण गिरेह छे. तेनु शरीर पातलु छे.ते गुफामां ते मुश्केली थी समाई सके छे. ते मां न तो चटाई अने न तो घासी नी पथारी. ते सांकड़ी अने अंधारी गुफामां ते एकलोज रहे छे. शियालानी ठंडी हवातां कई ओढतो नथी, टाटनो टुकड़ो आजु बाजु विटाली राखे छे, ते सिवाय बीजुं कंई कापड़ तेनी पासे न थी ते आग सलगावतो नथी. मौलाना रूमीए एक दरवेश ना मोंमां नीचेनी शेर मूंकी छे, ते एनी हालत ने अनुरूप छे:

'पोशिशे मा रोज, ताब आफताब

शब निहालीए, लिहाफ़ अज माहताब।

[दिवस अमारूं वस्त्र छे, सूर्य अमारी गरमीं छे; रात्रि (अमारी) सादड़ी छे अने चांदनी (अमारी) रजाई छे.]

तेना स्थाने पासे एक तलाव छे त्यां जई ने ते दर रोज बे बार नहाय छे. दिवस मां एक बखत ते उज्जैन नगरी मां आवे छे, त्यां सात ब्राह्मणो मांथी त्रण बाल बच्चा वाला छे. अने तेओ गरीब अने संतोषी हालत

---

१. फारसी साहित्य मां एक कल्पित पक्षी नुं नाम उपमा माटे वपराय छे. ते अंगे एकी मान्यता छे के तेनु नाम जाणमां छे अने तेना शरीर विशे माहिती न थी. एक समय तेनी संख्या एकनीज होय छे. तें हवामां कायम उडतुं रहे छे, तेना जीवन नो अंत नजीक आवे छे त्यारे ते बली मरे छे अने तेनी राख माथी बीजुं उत्पन्न थाय छे. कोई दुर्लभ, असाधारण विरल अने अप्राप्त वस्तु नी उपमा ए नामथी आपवा मां आवे छे,

१. तुजुके जहाँगीरो पृ० १७६–७७२. एक गिरेह बराबर त्रण आँगल पहोलाई नु मापथाय के. ए गजनो सोलमो भाग छे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मां आनंद मले छे. तेमनां घर पसंद करीने तेमने त्यां ते जाय तेओ जे भोजन पोताने माटे तैयार करे छे तेमांथी पांच कोलिया भीख तरीके तेओ पासे थी तेनी हथेली मां ले छे अने खाव्या बिना ते ओगाली जाय छे. तेम करी तेनी स्वादेन्द्रिय ने तेनी लहेजत प्राप्तथया देतो नथी ? ते भीख माटे जाय ते मां शरतो छे के आपनारने मुसीबत न पडे अने तेना घर मां कोई स्त्री प्रसव वाली तेमज मासिक धर्म मां न होय.— एनु नियमो आ त्रण धरो मां पलाय छे. मैं जे आलख्युं ते मुजब तेनुं जीवन चाले छे. ते कोई ने मलवानी इच्छा राखतो न की; परंतु तेनी घणी ख्याति थई गई ते थी लोको तेनां दर्शन करवा तेनी पासे जाय छे. ते ज्ञान सम्पन्न छे. वेदांत नु ज्ञान जे तसव्वुफ (सूफीवाद) नुं ज्ञान छे ते मां ते निष्णात छे, छः घड़ी तेनी पासे हुं रह्यो अने घणी वातो तेनी साथे करी, तेनो मारा उपर भारे प्रभाव पड्यो. मारी चर्चानी तेना उपर पण असर थई. मारा वालिदे (अकबर) असीरगढ़ अने खानदेश (ई० स० १५९९–१६००) जीत्यां अने आग्रा गया ते बखते एजस्थले तेमणे तेने जोया हता अने तेने घणी सारी रीते याद करता हता".

जहांगीर हि० स० १०२७ (ई० स० १६१८) मां अहमदाबाद थी पाछी उज्जैन गयो त्यारे फरीथी तेनी मुलाकाते गयो. हजी[1] तेओंगे तेणे लख्युं छे के "जदरुप ने मलवाने मारुं दिल तलपापड़ थयुं. बपोरनी नमाज पछी होड़ी मां बेसने तेनी मुलाकात करवा उतावलो हुंगयो. अने सांजना तेने एकांतवास ना खूंणां मां हुं दोड़ी पहुँच्यो. तेनी साथे में बात करी.

इलाही ज्ञानना चार भेद विषे तेनी पासे थी अनेक बाबतो में सांभली–ने तसव्वुफ अंगेनी वातो निर्मल दिल थी स्वाभाविक पद्धति ए करे छे. तेनी साथ चर्चा करवा मां आनंद आवे छे. तेनी वय साठ साल जेटली छे. बावीस वरस थी तेणे दुन्यवी संबंध तोड़ी नाखेला छे. अने ब्रह्मचर्य ना धोरी रस्ता उपर कदम मोकेलो छे. आठ साल थी ते नग्नजेवी अवस्था मां रहे छे. में विदाय लीधी त्यारे तेणे कह्या के 'हुं अल्लाह ना आ उपकार कई भाषा मां मानुं के आवा इन्साफमन्द बादशाह ना जमाना मां हुं शांतिमय दिल थी परमात्मानी भक्ति मां लीन रहुं छुं. अने कोई पणरीते तकलीफ नी धूल मारा मक्सदना दामन उपर चोंटती न थी".

हि० स० १०२८ (ई० स० १६१९) मां जहांगीर मथुरा मां पहोंच्यो त्यारे जदरूप त्यांहतो. ए समाचार मलतां तेना आनन्द नो पार रह्यो नहि. ए अंगेनी नोंध करता ते जणावे छे[2] के, "उज्जैन थी गोंसाई जदरूपे हिंदुओना तिर्थ स्थान मथुरा मां स्थलांतर करेलुं छे अने ते परमात्मा ना ध्यान मां लीन रहे छे. ए खबर मने मली त्यारे तेमना दर्शन करवा मारुं दिल अधीरुं बन्युं. शुक्रवार ने दिवसे हुं उतावले पगे गयो. अने लांबो समय एकांत मां निरांते कोई पण प्रकारनी बातचीत कर्या बिना त्यां रह्यो. खरे खर तेनी हस्ती गनीमत छे. तेनी साथे बेसबा मां आनन्द आवे छे. अने लाभ थाय छे।

---

१. तुजुके जहांगीरी पृ० २५४–२५५

२. वही पृ० २८२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सोमवार[1] ने दिवसे फरीथी गोंसाई जदरुप ने मलवा दिल आकर्षायु. निःसंकोच हुँ तेनी कुटीर तरफ उतावलो उतावलो गयो. अपने तेने मलयो. तेनी साथे उच्च कक्षानी घणी बात थई, अल्लाह ताला तेने ताजुबी उत्पन्न करे एवी शक्ति अर्पेली छे. तेनी समज उमदा प्रकारनी, तेनो स्वभाव उन्नत कोटिनो अपने तेनी परख शक्ति प्रचंड छे. ते साथे तेना मा इलाही ज्ञान संग्रहित छे. दुनियां नी माया मां थी तेणे तेनुं दिल मुक्त करी दीधेलुं छे. संसार तथा तेमां जे कंई छे ते तरफ तेतो पूंठ फेर वेली छे. ते एकांत खूणांमां निःस्पृह जीवन गाले छे. सृष्टि नी चीजो मा थी अर्धोगज पुराणुं टाट तेनी पासे छे. जेवड़े ते तेनुं गुप्त अंग ढांके छे. पाणीं पीवा माटे तेनी पासे माटींनु वासण छे. शियाला उनाला अने चोमासा मां ते उघाडो नग्न सिरे अने नग्न पगे रहे छे, अति मुश्किेली थी धावतु बालक दाखल थई शके एवी (सांकड़ी) गुफा मां ते रहे छे.

बुधवार ने दिवसे फरीथी हुँ गोसांई ने मलवा गयो. अने पछी तेवाथी छूटो पडयो. निःसंकोच तेनी संगतमां रही ने तेनाथी थयेली जुदाई मारा निष्ठावान दिल उपर बोज समान रही.

जहांगीर हि० स० १०२७ (ई० स० १६१८) माँ अमदाबाद मां हतो ते दरमियान पण तेदे एक सन्यासी कांकरियानी पाल ऊपर मली गयो हतो. तेणे नोंध्यु छे के "काँकरिया तलाब नी पाल उपर एक सन्यासी तूटी फूटी कुटिर मां रहेतो हतो. ते हिंदु हतो. मारु दिल संतोनी संगत तरफ आकर्षातुं रहे तु होवाथी कोई पण प्रकारना संकोच बिना शाही तंबु मांथी नीकलीने फकीरना जेवा तेना बसवाट तरफ हुँ गयो. लांवो समय तेनी पासे हुँ बेसी रह्यो. तपास करतां जाणवानुं मलयुं के ते सन्यासी ज्ञान, सज्जनता अने त्याग वृति धरावे छे अन परमात्मा अंगेना मर्म अने अध्यात्म ना भेद थी वाकेफ छे. बाह्य रीते ते फकीरी अने दरवेशों जेवो रहे छे अने आंतरिक रीते तेणे संसारी माया नो त्याग करे लो छे". आगल उपर जहांगीर तेने विशे लख्युं छे के 'त्यां अन्य अनेक संतो हता; परंतु ते सन्यासी थी चढे एवो ते मंडली मां कोई बीजो नजरे पडयो नहिं".

जैन मुनिओना प्रत्ये पण जहांगीर आदरनी लागणी धरावतो हतो. जैनाचार्यो मां हीर बिजय सूरि,[2] विजयसेन सूरि[3] अने विजय देबसूरि जैन समाज ना गोरव–रत्नो छे. जहांगीर ना समय मां एक एवो बनाव बन्यो के हीर विजय सूरि ना पट्ट धर विजयसेन सूरि ए विजयदेव सूरि ने पोताना पट्ट धर बनाव्या हता. तेना केटलाक शिष्यो ए ते नीमणूंक सामे वांधो उठाव्यो अने विरोध कर्यो, ए समये जहांगीर ने एवा ए विजय देवसूरि ने मलवानुं मनथयुं अने तेथी तेणे तेमने पोताना दरबार मां पधारवानुं आमंत्रण एक फरमान द्वारा पाठव्युं । जहांगीर मालवा मां मांडू (मांडवगढ़) मांहतो अने सूरि खंभात मां चोमासुं पालता हता. फरमान मलतां तेमणे मांडू तरफ विहार कर्यो अनेत्यां पहोंची शहेनशाह

१. तुजुके जहांगीरो पृ० २८२–८३

२. अकबर आ मुनि ने रमेशाँ पोतानी पासे राखतो रतो अनेदर विवारे सवारे एमना मुखे थी बोलाता सूर्य सर स्त्रनाम मालानुं एकाग्रता पूर्वक श्रवण करतो रतो. (पद्मश्री मुनिजिन विजयजी—जैन इतिहासनी झलक पृ० १८१)

३. पद्मश्री जिनविजय जी—जैन इतिहास नी झलक–१८७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ने मल्या. जहांगीर तेमनी विद्वत्ता, तेजस्विता अने क्रिया-निष्ठा जोई खुश थयो. अने तेओ हीरविजय सूरिना साचा उत्तराधिकारी होबानी खातरी थतां तेणे तेमने 'जहांगीरी महातपा' नी पदवी अर्पण करी अने गच्छना साचा अधिनायक तरीके तेने जाहेर कर्या.

सिद्धिचंद्र जहांगीर ना समय मां एक विद्वान जैन साधु हता. जहांगीर ना दरवार मां सिद्धिचंद्र नी हाजर जवाबी खीली नीकली हती. ते थी एक बार तेणे तेने साधु जीबन नो त्याग करीने पोताना दरबार माँ सारो दरज्जो स्वीकारबा दबाण कर्यु. अने नूरजहां ने पण तेना तरफ थी तेने भलामण करी. सिद्धिचंद्रे ए प्रलोभन नी दरखास्त पूर्वक टाली. अने तो पोतानां साधु जीवन ने दृढ़ता पूर्वक वलगी रह्या. सिद्धिचंद्र नु आ वलण जहांगीर ने पसंद पड्युं नहि. अने तेणे अने पोतानी इच्छा नो अनादर कर्यो ते थी रोषे भराईने तेने जंगल मा चाल्या जवानो तेणे हुक्म कर्यो. सिद्धिचंद्रे सहर्ष ते प्रमाणे कर्युं.

परंतु सिद्धिचंद्र ना गुरु भानुचन्द्रे [1] दरबार मां जबानुं चालुज राख्युं, जहांगीरे पण तेना प्रत्येना आदर मां कई कमी करी नहि. परंतु तेमना शिष्य ने थयेला गेर-इन्साफ ने लई ने तेमनो चहेरो उदास रहेतो हतो. तेनुं साचुं कारण जहांगीर ने समजमां आवतां तेने घणो पस्तावो थयो. अने ते विद्वान जैन साधु ने फरीथी दरबार मां पधारवा तेणे आमंत्रण मोकल्युं ते पछीते 'जहांगीर-पसंद' कहवाया.

शीख गुरु अर्जुन एक पवित्र पुरुष हतो. अने जहांगीर तरफ थी तेने हेरानगति थई हती ए बनाव तेना चारित्र्य ना प्रस्तुत पासा उपर डाघ तरीके गणवो न गणवो ए एक चर्चास्पद विषय छे. परंतु ए तो निर्विवाद छे के मुसलममान फकीरो अने दरवेशों अने हिंदु सन्यासीओ अने योगीओ ने मलवानी तेनी धुन हती, एवी व्यक्ति कोई ठेकाणो रहेती होवानी खबर पडतां ते तेने मलवा बेकरार थतो अने त्यां दोडी पहोंची तेने मलीने जंपतो. पवित्र पुरुषोनां निर्मल अने तेजस्वी व्यक्तित्व अने विद्वत्ता मां ते रहे तो अने तेमनो पूरो आदर करतो.

---

१. एमनी प्रतिभाना अद्‌भुत प्रयोग जोईने बादशाहे एमने 'खुश-फेहम' नो खिताब आप्यो हतो (आईने अकबरी)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org